VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

मूल्यों के बदलते स्वरूप : व्यतीत, अनंतर, दर्शांक

मनोज बाला,
शोधार्थी (हिन्दी)
ओ.पी.जे.एस. वि.वि. चुरू

सारांश :

जैनेंद्र कुमार को लेकर यह कहा जाता है कि जैनेंद्र कुमार मूल्यों के लेखक हैं। किसी भी साहित्यकार की अपनी मानदंड शैली होती है जो आदर्श और कल्पना दोनों में समायोजन का कार्य करती है। जैनेंद्र कुमार की यह शैली आदर्श की निष्ठा से अनुप्राणित है। नीतिवाद कहिए या फिर मूल्यवान कहिए, साहित्य समाज का दर्पण कहिए या फिर दीपक कहिए सब जैनेंद्र कुमार के पर्याय से दिखाई पड़ते हैं। वास्तव में साहित्यकार बहुत ही भावुक होता है, उसकी अनुभूति इसी भावुकता का प्रतिफलन होती है, वह नारी सौंदर्य से द्रवित होता है, प्रकृति सौंदर्य से द्रवित होता है और साथ ही समाज की पीड़ा से द्रवित होता है। नैतिक मूल्य अपने में पूर्ण मूल्य हैं, यह संसार को एक रूप का, जिसमें कल्याणमयी भावना होती है, प्रदान करता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता का अपना महत्त्व होता है। जैनेंद्र कुमार का साहित्य नैतिकता के गुणवत्ता का साहित्य है। यहाँ यह कहना संगत होगा कि व्यतीत, अनंतर और दर्षांक में मूल्यों को लेकर जैनेंद्र कुमार की कलम कुछ और तरह की लेखनी करती है। यह मान्यता मूर्त एवं अमूर्त को लेकर है। अन्तर, व्यतीत और दर्षांक में जैनेंद्र कुमार के नैतिक मानदंड बदलते नजर आते हैं। जैनेंद्र कुमार के ये तीनों उपन्यास जैनेंद्र कुमार स्वतंत्रता के बाद लिखे गए हैं। यहाँ लेखक जैनेंद्र कुमार की नैतिकता की बदलती अवधारणा प्रतीत होती है।

मूल शब्द : नैतिकता, स्वतंत्रता, मानदंड, जीवन शैली, व्यतीत, अन्तर, दर्षांक, मूल्यों, साहित्य, समाज, दर्पण, अनुभूति, नायक, चेतना, उपन्यास, निष्ठा, पर्याय।

प्रस्तावना :

जैनेंद्र कुमार मूल्यों में अटूट निष्ठा रखने वाले है क्योंकि उनका साहचर्य मोहन दास कर्मचंद गांधी का रहा है। अपनी माँ से जैनेंद्र कुमार ने बहुत कुछ सीखा जो उनके साहित्य में स्पष्ट परिलक्षित होता है, जीवन का बिना नैतिक मूल्यों के कोई आधार नही है, बिना आधार का जीवन पषुता का द्योतन करता है। दर्षांक, अनंतर और व्यतीत जैनेंद्र कुमार की उस युग की कृतियाँ है जो मनुष्य के मूल्यों से मोह भंग होने की बात कहता है। नैतिक जीवन में और अनैतिक जीवन में पषुता और मनुष्यता के मध्य का अंतर प्रतीत होता है।

मूल्य का अर्थ और नैतिक मूल्य :

संक्रमण के इस युग में समाज में मूल्यों की अधिक आवष्यकता महसूस की गयी है। जैनेंद्र कुमार इन्ही मूल्यों के सृजक हैं। मूल्य शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और मूल धातु से बना है। इस मूल धातु में यत् प्रत्यय जुड़ने मूल्य की चेतना मनुष्य के लिए एक आदर्ष आधार तैयार कर देती है। 'मूल' धातु के शब्द का 'मूल्य' मानकर शब्द कोष में अर्थ देखे तो ''कीमत, मोल, मजदूरी, लागत, किराया, भाडा, वेतन, लाभ, पूंजी, मूलधन आदि शब्द देखने को मिलते हैं। अंग्रेजी में मूल्य को टंसनम कहा जाता है। टंसनम शब्द लेटिन भाषा के टंसमतम से बना है जिसका अर्थ सुंदर और अच्छा। इस दृष्टि से मूल्य समाज में सत्यं, षिवम् और सुन्दरम् की अभिकल्पना करने वाला है। नैतिकता इन्ही मूल्यों के प्रयोजन में शामिल है। समाज की मान्यता के अनुरूप किया जाने वाला कार्य नैतिकता की श्रेणी में शामिल, बाकी को अनैतिकत मानकर छोड़ दिया जाता है। बिना नैतिकता के समाज में किसी भी कार्य में और सामाजिक रिष्तों में मर्यादा मिट जाती है। अत:

समाज को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए समाज के मानदंड होना अपरिहार्य है। ''जैनेंद्र कुमार का साहित्य इन्ही नैतिक संदर्भो को साहित्य है।''[१]

व्यतीत, अनंतर, दर्शाक का सामान्य परिचय :

'व्यतीत' एक आत्मचरित्रात्मक औपन्यासिक कृति है। इसका प्रकाषन वर्ष १९५३ में हुआ था, इससे पूर्व 'सुखदा' को भी जैनेंद्र कुमार ने इसी शैली में लिखा था। इसका नायक का नाम जयंत है। यह एक असफल प्रेमी है जिसका जीवन उद्देष्यहीन है। प्रेम की प्राप्ति ना होने से उसमें जीवन के प्रति रिक्ति आ गयी है। यहाँ एक बात और कहना संगत जीवन में जब प्रेम तार–तार होता है तो मर्यादाएं भी तार–तार होती हैं, यही जयंत के साथ भी हुआ है। लेखक चूंकि मनोवैज्ञानिक रूप का चित्रण करने वाले लेखक है। अत: लेखक ने जयंत के और उसके असफल प्रेम का चित्रण खुलकर किया है। दार्षनिक शब्दावली के कारण भाव व्यंजना जटिल बन पड़ी है। नैतिक के टूटते प्रतिमान यहाँ देखे जा सकते हैं। मानव जीवन के विचारणीय प्रष्नों पर विचार किया गया है। उपन्यास में कथावस्तु, पात्र, जीवन शैली सभी नवीन है। अनंतर का प्रकाषन वर्ष १९६८ है। मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार में प्रेम का स्वीकारना सरल नही है। प्रेम की समस्या को लेकर परिवारों में अक्सर द्वंद्व और तनाव की बात देखी जा सकती है। उपन्यास का नायक आदित्य है और नायिका उसकी चारू है। आदित्य अपराजिता जिसको सभी पाठक अपरा कहते से प्रेम करता है। यहाँ एक बात कहनी होगी कि सभी लोग अपने प्रेम को छिपाते है परन्तु अपरा आदित्य की पत्नी चारू से कहती है कि वह आदित्य से प्रेम करती है। उसके और आदित्य के शरीर वाले सम्बंध भी रहे हैं परन्तु तुम आदित्य की पत्नी हो और तुम ही पत्नी रहोगी।

उपन्यास में परिवार का मुखिया प्रसाद है और उसकी पत्नी का नाम रामेष्वरी है। आदित्य का परिवार धनी परिवार है, उसके कई कारखाने हैं, वह हमेषा अपने काम में लीन रहता है और उसकी पत्नी चारू उसकी प्रेमिका अपराजिता को लेकर बेचैन रहती है। लेखक ने उसके मन के भावों का वर्णन मनोवैज्ञानिक शैली में किया है। चारू की यह बेचैनी पूरे परिवार को बेचैन कर देती है। अपरा उनकी बेचैनी को दूर करने का कार्य करती है क्योंकि अपरा का स्वभाव ऐसा है कि वह सबका हित चाहती है। उसे अनुभव है, वह विरोध के प्रेम को स्वीकार करना पसंद नही करती। वह बुजूर्गों के पैर छूना जानती है। चारू की आँखे खुल जाती हैं और चारू अपरा की मित्र हो जाती है।

दर्षाक का प्रकाषन वर्ष १९८५ है और जैनेंद्र कुमार देहावसान वर्ष १९८८ है। यह जैनेंद्र कुमार की अंतिम औपन्यासिक कृति है। इसमें लेखक ने औरत के अहं के सामने पुरूष के झूकने की कथा को महत्त्व दिया है। इस उपन्यास की नायिका सरस्वती नाम की एक महिला है। उसके विवाह के पष्चात अपने पति से सम्बंध स्नेहमयी नही रहते, तनाव होता है और तलाक हो जाता है। इस तलाक की घटना से सरस्वती का मन परिवर्तन हो जाता है, वह व्यभिचार करने लग जाती है और वैष्या बन जाती है। अब वह सरस्वती से रंजना बन जाती है, कुछ समय के बाद उसके मन का वैराग्य उसे एक संस्थान बनाने की बात करता है। वह पुरूषों से जी भर कर ईर्ष्या करती है और इसकी आग में जलती रहती है।

व्यतीत, अनंतर, दर्शाक के नैतिक स्वभाव :

व्यतीत, अनंतर और दर्षाक का कथ्य मध्यमवर्गीय समाज का कथ्य है। इस मध्यमवर्गीय समाज में व्यक्ति नैतिकता और अनैतिकता से जुड़ा हुआ है, उसकी गति साँप छछूंदर वाली है। नैतिकता का दामन थामने में वह अपने मकसद को पूरा नही कर पाता। वास्तव में भारत की स्वतंत्रता के पष्चात भारत की सामाजिक स्थिति में और उसके मूल्यों में गिरावट आयी थी, उसी समय जैनेंद्र कुमार की ये तीनों कृतियाँ प्रकाषन में आयी थी। सामाजिक परिस्थिति में प्रतिफलन व्यक्ति अपनी निजता और उसकी कुंठाएं उसे बहुत पीड़ित ही नही करती बल्कि उसे सनकी भी बना देती हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति से नैतिकता की उम्मीद करना निरर्थक है।

जैनेंद्र के आलोच्य तीन उपन्यास व्यतीत, अनंतर, दर्षाक सामाजिक उपन्यास है जिसमें विवाह

और प्रेम की समस्या को मुख्य रूप से चित्रित किया गया है। सफलता और प्रेम कभी भी स्थाई नही रहते, यह जैनेंद्र कुमार स्वयं मानते है। जैनेंद्र ने स्वयं मध्यमवर्ग की स्थिति को भोगा है। इसका कथ्यगत प्रमाण यह है कि जैनेंद्र कुमार अपनी मन की परिस्थितियों के अनुरूप मनोविष्लेषणवादी बन गए। कृष्ण बलदेव वैद्य लिखते है, ''जैनेंद्र को पढ़ते समय मेरे मन में कई तरह की कैफियत पैदा होती हैं – विस्मय होता है, मस्ती मिलती है, उत्तेजना होती है, झुंझलाहट महसूस होती है, आराम भी मिलता है, उजाला उत्तरता हुआ दिखाई पड़ता है।''[२]

सामाजिक सम्बंधों के गणित के कारण विकास करता है और सम्बंधों की प्रगाढता परिस्थितियों पर आधारित होती है, यही जीवन की शैली है और यही समाज का स्वरूप है। भावुकता का स्वरूप व्यक्ति की अन्त: चेतना के साथ जुड़ा हुआ, जीवन की विसंगतियाँ और जीवन के अन्तविरोध व्यक्ति को नैतिक और अनैतिक के बारे सोचने के भेद को समाप्त कर देते हैं।

जैनेंद्र कुमार के नए मूल्यों के चित्र सोच समझकर प्रस्तुत नही किए गए बल्कि परिस्थिति प्रदत्त हैं। टूटते जुड़ते सम्बंध मनुष्य की भावनाओं में विचलन पैदा करते हैं। इतना ही नही व्यक्ति की शालीनता और व्यवहारिकता को भी प्रभावित करते हैं। यही जीवन है, यही नैतिकता है और यही व्यतीत, अनंतर और दर्षाक की सामाजिकता का स्वरूप है। अपरा, चारू, रंजना और अनिता इसी की देन हैं।

अहं और आत्मपीडन का आधार लिविडो को माना जाना न्याय संगत प्रतीत होता है, इसीलिए सरस्वती को रंजना रूप धारण करना पड़ा और अपनी प्रतिषोध की ज्वाला को शांत करने की कोषिष की गयी। आत्मपीड़न व्यक्ति को विद्रोह की ओर प्रवृत करता है और समाज में विद्रोह मूल्यों को तिलांजलि देने का कार्य है। स्वयं जैनेंद्र कुमार लिखते हैं, ''नैतिकता के ढकनों को उपर से दाबने से अनैतिकता समाप्त हो जाए यह संभव नही है, यह सच है कि अहं मन्य नीतिवाद का दबाव अनैतिक आचरण को हठिला और बहुत बेह्या बना देता है।''[३] रंजना इसी का परिणाम है।

एक अन्य स्थान पर जैनेंद्र कुमार और लिखते हैं, ''आवष्यकता है कि वे लोग शालीन चाहे कम समझे जाए, पर अपनी जगह प्रकृत बने सभ्य चाहे कम हो पर ईमानदार अवष्य रहें।''[४] यह जैनेंद्र कुमार की भावना तीन उक्त उपन्यासों व्यतीत, अनंतर और दर्षाक में देखी जा सकती है। यहाँ जैनेंद्र कुमार की कलम पारम्परिक नैतिक मूल्यों के स्थान पर नैतिक चित्र बदलाव के रूप में प्रस्तुत करती हुई चलती है।

व्यतीत एक असफल प्रेम कथा की चित्रण करने वाली कृति है। यहाँ जयंत जो कृति का केंद्रीय पात्र है, अनिता से बहुत अधिक प्रेम करता है जो सफल नही हो पाता और साधन सम्पन्न परिवार के पुटी से विवाह करने के बाद अनिता की कुंठा उसके जीवन की खुषिया लील लेती है। वह नैतिक और मर्यादा सबको तिलांजलि देकर जयंत से कहती है, ''तुम मुझको ले सकते हो, समूची को, जिस विधि चाहो ले सकते हो, स्त्री सदा यह नही कहती, बेहयायी की हद पर भी नही कहती लेकिन मैं सुध रखकर कहती हूँ।''[५] यह बदलती नैतिकता का चित्र है। अपराजिता इस अनंतर उपन्यास की नायिका है वह आदित्य से बहुत प्यार करती है। वह एक संवाद से कहती है, ''चारू तुम यह करोगी तो तुम खुष होगी, वह खुष होंगे, प्यार में तुम पहल लो, प्यार में तुम बेह्या और बेरहम भी बनो।''[६] दर्षाक की पूर्व की सरस्वती और अबकी रंजना इस बात की ओर संकेत करती है कि जीवन में कोई भी चीज स्थाई नही हो सकती चाहे वह नैतिकता ही क्यों न हो। पारम्परिका रंजना का चरित्र आधुनिक सरस्वती में कोई भेद नही दर्षाता। सिवाय उसकी नैतिकता को छोड़कर। कहना संगत होगा कि तीनों आलोच्य कृतिया जीवन की कठोर ही सही परन्तु सच्चा चित्रण प्रस्तुत करते हुए दिखाई पड़तें हैं।

उपसंहार :

जैनेंद्र कुमार युग के साथ चले और परिस्थितियों को स्वीकार करते हुए उन भावनाओं को

मौलिक रूप में अपनी कृतियों में प्रस्तुत किया जो युगबोध का प्रतीक थी। जीवन की मर्म समझकर अपने कथ्य को विविध चित्रण के साथ लिखते हुए पूर्णत: ईमानदारी का निर्वाह किया है। चारू, अनिता, अपरा और रंजना ऐसी नारियाँ है जिन्होंने अपने स्वयं के केंद्र में रखकर अपने जीवन को जीया है। काम, कुंठा, अहं, विद्रोह यह सब क्षनिक होने पर जीवन की दिषा बदलने का कार्य करते है जीवन की इसी बदलती दिषा का जैनेंद्र कुमार ने अपने तीन अंतिम उपन्यासों में चित्रित किया है। स्त्री–पुरूष के सम्बंध ही नैतिक और अनैतिकता की परिभाषा बनाते है इसमें परिस्थितियाँ मुख्य और लेखक जैनेंद्र कुमार गौण हैं।

संदर्भ सूची :

१. जैनेंद्र कुमारी की मूल्य निष्ठा, महेंद्र प्रताप सिंह, पृ. १३
२. जैनेंद्र कुमार का साहित्य, कृष्ण बलदेव वैद्य, पृ. २२
३. साहित्य का श्रेय और प्रेम, जैनेंद्र कुमार, पृ. १०२
४. व्यतीत, जैनेंद्र कुमार भूमिका से
५. दर्षाक, जैनेंद्र कुमार, पृ. ५७
६. अनंतर, जैनेंद्र कुमार, पृ. १०८

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com